श्रीगोकुलनाथ कृत

अष्टछाप

संकलनकर्ता

धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
विश्वविद्यालय, प्रयाग,

प्रकाशक

रामनरायन लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

१९२९

प्रथम संस्करण १०००] [मूल्य १)

सूची

—: ० :—

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित '८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाइं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठल नाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा सांप्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सन्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के व्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की जीवनियों

के इन प्रायः समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ट परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे संस्करण न होने तथा इन ग्रंथों के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियाँ देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अंगों का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य में कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से संग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस संग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के संवत् १९६० के संस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया संस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने संस्करण के मूल में विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित संवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा संस्करण देखने को मिल गया था। इस संस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठ-भेद फुटनोट में दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य संस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अतः अन्तिम चार जीवनियों में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियों अथवा छपे हुये संस्करणों के बिना किसी ग्रंथ के मूल को

"शुद्ध करने" अथवा "संपादन करने" में मुझे विश्वास नहीं है अतः इस ओर प्रयास ही नहीं किया गया है।

इस बड़ी त्रुटि के रहते हुये भी प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन से उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी इसी धारणा से हिन्दी जनता के सामने यह अपूर्ण पुस्तक रक्खी जा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि विद्यार्थी वर्ग तथा हिन्दी जनता दोनों ही इस संग्रह को रुचिकर तथा हितकर पावेंगे।

१—१—१९२९

धीरेन्द्र वर्म्मा।

अष्टछाप

अथ[1] सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो एक समय[2] श्रीआचार्य जी महाप्रभू अडेलते[3] ब्रज को[4] पावधारे[5]। सो कितनेक दिन में गऊघाट आयै[6]। सो गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचोंबीच[7] है तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू पावधारे। सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभू उतरे। तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप स्नान करिके संध्या-वंदन करिके पाक करन को बैठे[8] और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन को समाज बहुत[9] हुतौ और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी को[10] रसोई करन लागे।

सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतौ[11]। सो सूरदास

---

१ अब श्री आचार्य जी महाप्रभुन के सेवक। २ समें। ३ अंडेलते। ४ ब्रज कौं। ५ पाउं धारे। ६ आये। ७ बीचा बीच। ८ बैठे। ९ वहुत। १० श्रीठाकुर जी की। ११ हुतो।

जी स्वामी हैं आप सेवक करते। सूरदास जी भगवदीय हैं[१] गान बहुत आछौ[२] करते ताते वहुत[३] लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे। सो सूरदास जी के सेवक देखि के सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिण में दिग्विजय कीयो है तब[४] पंडितन को जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कीयौ है सो श्रीवल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं। तब सूरदास जी ने अपने सेवक सों कह्यौ जो तू जाय के दूर बैठि जब आप भोजन करिकें बिराजे तब खबरि करियो हम श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को जायँगे। सो वह तनक दूर जाय बैठो।

तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते। सो पाक सिद्ध भयो। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो। पाछे समयानुसार भोगसराय अनोसरि करिकें महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे। तहाँ सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आसपास आय बैठे। तब वह सूरदास जी को सेवक आयौ सो सूरदास जी सों कही जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थलते आयकै श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर आवो बैठो। तब सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि कै आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी

१ हे। २ आछो। ३ बहुत। ४ सब।

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद् जस वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने कही जो आज्ञा[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग धनाश्री

हों हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान कों लायक ॥ १ ॥
जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ ॥ २ ॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ बेर दूसरी और ॥ ३ ॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हों यही हमारी भेट ॥ ४ ॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5]प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ।
अबकी वेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों ठाडौ ॥ ५ ॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु में सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब द्यौस चारिके में तो जन्मत ही कौ ॥ १ ॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छांडि तुम और उधारे मिटै शूल कोसें जीकौ ॥ २ ॥

---

१ आज्ञा। २ विश्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बनाऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हों लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन में कहत सबन में नीकौ ॥ ३ ॥

ऐसो पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर है कें ऐसो घिघियात काहे को है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हों तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेगे[1]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी कों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोष दूर भये। तातें सूरदास जी को नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानियै सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण को प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराब्धि सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ १ ॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीयै। सो पद। रागविलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम बियोग।" यह पद संपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह पद

---

१ समझायेंगे। २ लीलाक्षराब्धि सायिनं।

दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयो। सो यामें कह्यौ है जो तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीये ताते जानी जो सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यैा जो लीला को अभ्यास भयैा। पाछें सूरदास जी ने नंदमहोत्सव कीयैा। सो श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायैा। राग देवगन्धार। 'ब्रज भयैा महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायैा। सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहैं जो सूरदास मानों निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीये हुते तिन सबन को नाम दिवायो। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी कें पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायो तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जो पद कीये सो श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादश स्कंधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे। पाछें फेरि ब्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज कैा आये।

प्रसंग २

अब जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू ब्रजकैां पधारे सो प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुल कों दर्शन करौ। सो सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सो दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल-लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जी ने विचार्यौ मन में जो श्रीगोकुल की बाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगोकुल की बाललीला को पद गायौ। सो पद।

रागबिलावल

सो नित करन पुनीत लियै।[1]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेड़ुत,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन कौ तिलक दियै।
लार लटकन मानो मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ बजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि के आप वहुत प्रसन्न भये। पाछें औरहू पद गायौ।

---

१ शोभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन में विचारे जो श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मंडान भयौ और कीर्तन कैा मंडान नाही कियो है ताते अब सूरदास जी को दीजिये। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सो सूरदास जी कौ साथ लीये ही सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मंदिर में पधारे। तब सूरदास जी सों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयो। तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथ जी को सुनावो। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायो। सो पद। राग धनाश्री। "अब हों नाच्यो बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायो। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जो अब तो सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करो। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसो जस करिकें गाय सुनायो। सो पद। राग गोरी। "कोन सुकृत इन व्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायो। सो सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सो जैसो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ है ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह की यो[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

---

१ विज्ञप्ति। २ तो।

तातें भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन में पूतना करि, सकट तृनावर्त करि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने बहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ ब्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसंग ३

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह बिचारी जो सूरदास जी काहू बिधि सों मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति ने जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने बिसनपद बहु[3] कीये हैं जो मोकों परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागबिलावल। "मना रे तू करि माधो सों प्रीति।" यहपद देशाधिपति के आगे संपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवदनुग्रह की सादा सार्ति रहै, और संसार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसंग कौ सदा भय रहै, और भगवदीय के संग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणारबिंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति कों सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्रा विधि। ३ बहुत। ४ पनमेश्वर।

सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर[1] ने राज दीनों है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावो। तब सूरदास जी ने यह पद गायो। सो पद। राग केदारौ। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद संपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायो। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचारयौ जो ये मेरो जस काहे को गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात को लालच होय तो गावें ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त में गायो। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायो हो। देशाधिपति ने पूछो जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हो सो तुम कैसें देत हो। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोले जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहाँ देखत हैं सो वर्णन करत हैं। तब देशाधिपति ने सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनको कछू दीयो चाहिये परि यह तो भगवदीय है इनकों कछू काहू बात को इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सों बिदा होयकें श्रीनाथ जी द्वार आये।

प्रसंग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सो कोई[6]

---

१ परमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते । सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं । ऐसे खेल में मग्न हैं । सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय है तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ वह प्राणी कैसो अपनो जनमारो[2] खोवत हैं । भगवान ने तो मनुष्य देह दीनो है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो ये तो या देह सों हाड कूटत हैं । या में यह लोकिक सिद्धि नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते बहिर्मुख । तातें श्रीठाकुर जी ने इनकों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै । सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने संगकेन सों कह्यौ । सोपद ।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार ।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ १ ॥
साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि ।
दाव अबकें पर्यो पूरो उतरि पहिलो पार ॥ २ ॥
वाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही कों मारि ।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक बिचार ॥ ३ ॥
काम क्रोध जंजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि ।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जो नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यौ ।

---

१ है । २ जमारो । ३ पंच । ४ काने ।

सो या पद में सूरदास जी नें कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच बिचार।' ये तीन्यौ वस्तु चौपड़ में चाहियै सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे ते जो समझि न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चहियै। और सोच कहियै चिंता, सो भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तौ संसार ऊपर वैराग्य केसें आवै ताते सोच कहियै। और विचार, जो या जीव कों विचार हीं नाहीं तौ संग दुसंग में कहा करेगौ ताते बिचार चाहियै। सो ये तीनों वस्तु हंाय तौ भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूँ ये तीनों वस्तु चाहियै। समझ कहै गिनवो न आवतो गोट केसें चलै, और सोच अगम जो मेरे यह दाव पड़ै तो यह गोट चलूँ, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चौपड़ खेली जाय। सो वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसंग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन कों आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आयै श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनायै। सो श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भयै।

---

१ प्राप्ति। २ हे।

पाछें श्रीगुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत। प्रिया जी झूलत हुते ता समय गायौ। सो पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयनं" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनि कें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥
कठुलाकंठ रुचिर केहरि नख व्रजमाल बहुतई अमोलनि।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहें जन सूर कहाँ लों बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गति ॥१॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकित नेन चहूँ दिस चितवत और सबन कों देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर बिधि सों लाये मिलत उपहार ॥३॥

[1] प्रेष।

गिरि गिरि परत बदनते ऊपर हैं दधिसुत के बिंदु ।
मानहु सुधाकन खोरवत पिय जिय दुंद[1] ॥४॥
बालबिनोद बिलोक सूर प्रभू बित भई ब्रज की नारि ।
फुरत न बचन वरजिवे कों मनराही[2] बिचार बिचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग वरनो सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन में नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुंदर के बहु विधि रंग विवनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहुँ असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहर[7] हरत मन मोहन सुख वगराई ।
मानहुं मंजुल कंज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हंसन दुरति प्रगटत मानो विंधु[9] में बिपुलताई ॥५॥
खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखैा सखी एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ जलबिंदु । २ रहि । ३ फुलहे । ४ धनुष । ५ मणि । ६ भूमिज सो ।
७ चिहुर । ८ कंजन । ९ विंदु ।

एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पंचवार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥२॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ बिचार ।
सूर श्रीगोपाल की छबि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताईं । ता उपरांत भगवद् इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आये । श्रीनाथ जी की ध्वजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे । अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सों श्रीनाथ जी को दर्शन हाेय तौ जानिये परम भाग्य है । श्रीगुसांईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं । ऐसे बिचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौं चिंतवन करत हैं । और श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहाँ स्मरण करत हैं तैसे ही श्रीगुसांईं जी इनको छिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार हाेतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सो तादिन श्रीगुसांईं जी श्री-

नाथ जी कों सिंगार करत हुते और सूरदास जी को कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसांई जी ने पूछो सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तो आज परासोली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जो पुष्टमार्ग कों जिहाज[3] जात हैं जाकों कछू लेनों होय तौ लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो में हू आवत हों। पाछें श्रीगुसाईं जी वेर वेर सूरदास जी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद-स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सों श्रीगुसाईं जी ने पूछो जो सूरदास जी कैसे हो। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हो महाराज की वाट देखत हुतो। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायो। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥

बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥
भक्त बिरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभू कों कत दीजे पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ । सो सुनिकें श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसो दैन्य प्रभू अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है । तब वा वेर श्रीगुसांई जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हू ठाडे हुते । तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जो सूरदास जी ने भगवद् जस वर्णन कीयो परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो । तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो में तो सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयो है कछू न्यारौ देखूँ तो न्यारौ करूँ परि तेरे साथ कहत हो या भाँति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ । सो पद ।

---

१ कृपाया सुख की ।

राग बिहागरो

भरोसौ दृढ़ इन चरनन केरो ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरो ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो ।
सूर कहाकहि दुबिधि आधिरो[१] बिना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यौ । पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई । तब श्री-गुसांई जी कहैं जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहां है । तब सूर-दास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

राग बिहागरो

बलि बलि बलि हो कुमर राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी कैसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि श्याम सहज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अब ही ह्वै आयो निरखि देखि निज देह सयानी ।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयो विहसानी ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनों कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस के भरे नेत्र देखे । तब श्रीगुसांई जी ने पूछो जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ है । तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

---

१ आंधरो ।

राग बिहागरो

खंजन नैन रूपरस माते।

अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।

चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताठंक[2] फँदाते।

सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयो। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसांई जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। तातें सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण। २ ताटंक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—: ० :—

प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सो श्रीरण-छोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सो आपन[1] मीराबाई के गाँव आयैा। सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गये। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह त्रैष्णव[2] हुते। सो काहू कैां आयें आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी बिदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तो आवत ही कही जो हूँ तो चलूंगो। तब मीराबाई ने कही जो बैठो। तब कितनेक महोर श्रीनाथ जी को देन लागी। सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सो जब आगे आयै तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहां[3] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सवन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठैार कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जो एक वेर शूद्र श्री-

---

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून कों सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करने[3]। सो भेट आवती सो खरच होती, कछू संग्रह न राखते, सब खरच होय जातो. और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा टहल करो तब कृष्णदास अधिकारी भये, अधिकार करन लागे।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागे सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते ब्रज में फिरयौ करते सो कृष्णदास कों मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हों कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछो जो श्रीनाथ जी की सेवा कोन करत है। तब कृष्णदास ने कही जो बंगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी को अपनो वैभव बढ़ावनो है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यों नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सो तब बंगाली श्रीनाथ जी को भोग धरते सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतो

---

१ मुकट। २ हे। ३ धरते। ४ चुटिया।

देवी को सो सामने बैठावते जब भोग सरावते । वा देवी कौ अपनी चुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते । सो बात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम बंगालीन को दूर करौ । तब कृष्णदास ने कही जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें । तब अवधूतदास ने कह्यो जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसांई जी की आज्ञा ले आवो । जैसे बने तैसे इन बंगालीन को काढो ।

तब कृष्णदास अड़ींगते फिरे । सो श्रीगोवर्द्धन आये । तब बंगालीन सों कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसांई जी के पास आडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सों किरयो[1] । और सब सेवक हुते तिनसों कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसांई जी के पास कछू काम है सो अडेल कों जात हों तुम सावधान रहियो । ता पाछें श्रीनाथ जी सों बिदा होय के अडेल कों चले । सो दिन १५ में श्रीगुसांई जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसांई को दंडोत कीये । तब श्रीगुसांई जी ने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यों आयो । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी कों अपनें वैभव बढ़ावनें है और बंगालीन ने बहुत माथौ उठायो है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन को देत हैं ।

तब श्रीगुसांई जी कहैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई । ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की भेटभई । पाछें अडेल आये । तब श्रीगोपी-

---

1 करियो ।

नाथ जी ने कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथ जी कौ है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियौ चाहियै। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहके पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयें। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियौ। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डबरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोना रूपा के कियै। सब करिकै श्रीनाथ जी सों बिदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आयै। ता पाछें बंगाली बरस एक कें भीतर सब ले गयै। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयौ। यह बात श्रीगुसांई जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बंगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसें निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बंगालीन कों निकासौ ताते आप या बात में कछू मति बोलौ। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनो आप कर लेउंगौ। जैसे बंगाली निकसेंगे तैसे काढूँगौ। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखयै, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसांई जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल कों। लिखौ जो कृष्णदास कों श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जो तुमसों कृष्ण दास कहैं सो करि देउंगै[1]। सो पत्र लेकें श्रीनाथ

[1] देउगे।

द्वारिका[1] कों चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीरबल सों मिले। पत्र श्रीगुसांई जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि कें कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम कहो तैसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तो में मथुरा जात हैां बंगालीन कों काढिवे कों।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों बिदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चले। सो मथुरा आये। तब मार्ग में अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सों अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बंगालीन कों काढो, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव फैलावनों हैं। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीगुसांई जी की आज्ञा लेके आयो हैं अब जाय कें बंगालीन कैा काढत हैां। इतनों कहिकें कृष्णदास चले। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बंगाली सब रूद्रकुंड ऊपर रहते सो उहाँ उनकी झोंपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयो। तब बंगाली सेवा छो;कै पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बंगाली देखें तो कृष्णदास नें झोंपरी में आग लगाय दीनी है। तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बंगाली तहाँ ते भाजे सों मथुरा आये। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने में कृष्णदास

---

1 श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जो क्यों रे शूद्र तू कोंन जो इन ब्राह्मणन कों मारे । तब कृष्णदास ने कही जो हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नाहीं, तुमहू तो कायस्थ हौ । तब सनातन ने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनेगो तौ तू कहा जवाब देयगो । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो हों तो नीके जवाब देउंगो परि तुमको जुबाब देन में दुःख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगो[1] जो तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दंडौत करावत हौ । तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहे और बंगालीन सों कह्यौ जो तुम जानो ये जानें ।

तब बंगाली मथुरा के हाकिम पास गये । तब कृष्णदास जाय ठाडे भये । तब हाकिम ने कह्यौ जो भयौ सो तो भयौ परि अब इनकौं राखौ । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तौ इनका[2] न राखेंगे । ये तौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोंपी हुती सो ये सेवा छोड़ कें क्यों आये । जो इनकी झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे । ताऊपर तुम कहत हौ जो हम श्रीगुसांई जी कों लिखेंगे । वे कहेंगे तेसे करेंगे । तुम श्रीगुसांई जी कों लिखौ ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आये । तब कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी कों पत्र लिखौ तामें बंगाली काढे सो सब समाचार बिस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

---

१ न आवेगो । २ इनको ।

जो अब पधारिये तो भलो है। सो पत्र श्रीगुसांई जी के पास अडेल आयो। ता पाछे श्रीगुसांई जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आये। तब वे बंगाली सब आये। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सों कृष्णदास ने हमकों काढे। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यों गये दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खांयगे कहा। तब श्री गुसाँई जी ने इनकों श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियों जो आवै सो खाइयो। तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन ने श्री गोवर्द्धन रहिवौं छोड़ दीयौ। ता पाछे श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी को अपनों वैभव बढ़ावनों हो सो सब भीतरियान को नेग और सब सेवकन कों नेग जो जा भाँति श्रीनाथ जी ने कह्यौ ता भाँति श्रीगुसाँई जी ने बाँधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्ण दास अधिकार करन लागे।

प्रसंग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनि[3] जो श्याम मति[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयौ।

[1] वे। [2] बहुरि। [3] दीनी। [4] कुमरि।

सो श्यामकुमर आछै मृदंग बजावते । सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये । तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सों कही जो श्री नाथ जी ने आज्ञाकरी है सो मृदंग ले के परासोली चलो । तब श्यामकुमर ने कह्यौ जो मोहू कों श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है ताते चलियै । तब श्यामकुमर मृदंग ले के आयौ ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सों देखे तो श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजे हैं । तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सों कह्यौ जो तू तो मृदंग बजाय, और कृष्णदास सों कह्यौ जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ । तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ । सो पद ।

राग केदारौ ।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग
लाग डाट उरपतिरपरास संग राखो ।
झपताल मिल्यौ राग केदारो
सप्तसुरन अब घर तान रंग राख्यौ ॥
पाई सुख सिद्धि भरतकाम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रंग राख्यौ ।
वनिता सत जूथ संग लिये निरखत क्यों सघस[1]
चंद बलिहारी कृष्णदास सुधर[2] रंग राखौ ॥

१ सघन । २ सुघर ।

यह पद कृष्णदास ने गायौ। श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ। श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ। तातें श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते।

प्रसंग ४

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये। तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सों पूछो जो तुम पद करत हो ता में मेरी छाया है। तब कृष्णदास ने सूरदास जी सों कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे। तब कृष्णदास एकांत में बेठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक को[1] कीयौ और चौथी तुक बने नाहीं। तब घडी दोयलो बिचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे। सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिख दीये। कृष्णदास ने आधौ पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथ जी पूरो करिकै आप तो पधारे। ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखै तो श्रीनाथ जी पूरो पद करिकै श्रीहस्त सों लिखि गये हैं। सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयो और कहैं जो सूरदास जी आवें तो पद सुनावै। तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों

---

[1] तो।

आयै तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयौ पद एक मेनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जो ने कह्यौ जो कहौ सुनें तौ जानें। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत बने कान्ह गोपबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भौंहें मनमथ चाप वक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चंद्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि वदन
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली॥
अरुण सकुच अधर बिंवफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद रसनावली।
श्रवण कुंडल भाल तिलक वेसरि नाक
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपानि
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

वलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मोहित अखिल विश्व
गोपिका जनमसि ग्रसथित प्रेमावली॥

---

1 छुरित। 2 कृष्ण।

कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज वलित भृगरोमावली ।
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गंड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली ॥
पीत कौसय परिधाने सुन्दर अंग चरण
नुपुरवाद्य गीत सबदावली ॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगें कह्यौ। सो सूरदास जी तीन तुक ताँहि तो बोले नाहीं। और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदास जो ने कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की बानी पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहे। ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछू सामग्री चाहियत हुती। सो कृष्णदास गाडा लेकें आगरे को आये। सो आगरे के बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती। सब लोग तमासो देखत हुते। सो कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब वह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सो वह वेश्या

बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तैसोई करे। सो कृष्ण-दास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहैं जो यह तो श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछें वा वेश्या कों दशमुद्रा तो वहाँ ही दिये और कही जो रात्रि कों समाज सहित आइयो। ता पाछें कृष्णदास उहाँ हवेली में उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेकै गाडा लदाय सिद्धि करवायो।

ता पाछें रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयो गान भायो। वापै कृष्णदास बहुत रीझे सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सों कह्यो जो तेरो गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख़्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयो। ता पाछें कृष्णदास ने एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायो। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या कों साथ ले के चले सो आगरे ते आये। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आये। सामग्री सब भंडार में धराई। ता पाछे जब उत्थापन को समय भयो तब कीर्तनियाँ काहू कों बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या कों समाज सहित ले गये। श्री गुसाँई जी मंदिर में ठाड़े श्रीनाथ जी कों मूंढा[2] करत है और मणि कोठा में वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायो॥ सो पद॥

राग पूरबी॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यो।
ललित त्रभंगी अंगन परि चलि गयो तहांई ठटक्यो॥ १॥

---

१ बागे लेजान। २ मूंछा।

सजल श्यामघन चरण नीलह्वै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥२॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनें कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला में प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तो या तें जीविका हुती अब हम कहा खायंगे। तब कृष्णदास नें कह्यौ जो तुम क्यों रोवत हो चलो नीचे खायवे को देऊँ। तब उन समाजिन कों नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया दे बिदा किये।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी नें वा वेश्या कों अंगीकार करी। तातें श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार करत हैं।

प्रसंग ५

और कृष्णदास को गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्रीगुसाँई जी को न सुहावतो। सो एक दिन श्रीगुसाँई जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टी परी ताते श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तो समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ तब भोग सरायौ। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसाँई जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ। तब श्रीगुसाँई जी आप तो भोजन करिकें पोढ़े। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायौ और वासूं कहें जो हूं तो भूखो हूं। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसाँई जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यों रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती ताते राजभोग आरोग्यो नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसाँई जी के पास आयौ। सो श्री गुसाँई जी भोजन करिकें पोढ़े हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसाँई जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसाँई जी चौकि उठे तब देखें तो श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछो जो यहां इतनी वेर कहाँ आयो हो। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोकों लात मारिकें जगायौ और कह्यौ जो आज तो मैं भूखोहों। तब मेने श्रीनाथ जी सों कह्यौ जो महाराज भोग तो श्रीगुसाँई जी ने समर्प्यो है तुम भूखे क्यों रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी ताते में नाहीं आरोग्यो।

तब श्रीगुसाँई जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसाँई जी के साथ ही आयौ। तव श्रीगुसाँई जी नें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवै। तब भात और वडी करी सो तत्काल सिद्ध भयौ। तब श्रीनाथ जी कौ भोग समर्प्यौ। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

---

[1] वह।

ऊपर आये। तब श्रीगुसाईं जी की आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठोरो समर्प्यो। ता पाछें समय भयो। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी कों पोढाये भोग सरयो हो सो प्रसाद एक डवरा में उहाईं रह गयो। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यो हुतो सो उहां ही रह गयो। तब श्रीगुसाईं जी डवरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कौं वह बडी भात को महाप्रसाद रंचक रंचक बाँटि दीनों। ता पाछें श्री गुसाईं जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुति भयो। अति अलौकिक स्वाद भयो। सो श्री गुसांई जी आप सरायो। तब कृष्णदास ठाड़े हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यों न उत्तम होय। तब श्रीगुसांई जी ने हंस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसंग ७

अब जो यह बात श्रीगुसांई जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों बिगाडी। तब श्रीगुसांई जी सों श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ो। तब श्रीगुसांई जी आप तो तहाँ ते फिरे सो परासोली में आय रहे। तब मन में विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कें कछू बोले नाहीं। सो आप परासोली में रहे। सो परासोली में ध्वजा के साम्हे बेठि के विज्ञप्ति कियौ। और श्रीगुसांई जी तीन दिन तो श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आय रहे। तब श्रीगुसाई जी के मंदिर की खिरकी परासोली की और पडती ताके साम्हे बेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की और की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्री-गुसांई जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय के चरणोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास कों सुहावतो नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसांई जी के दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय। परि सेवकन सों कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसांई जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ जी को दे दीजे। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सो रामदास श्रीगुसाई जी को देते। तब श्रीगुसाई जी वा पत्र को वाँचि कै पानी में पी जाते। या भाँति सों छै महीना बीते परि श्रीगुसाई जी नें श्रीनाथ जी कों अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री-नाथ जी के बिरह को स्नेह बहुत करते। या भाँति छै महीना भयै।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसाईं जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल नें श्रीगुसाईं जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो परासोली हैं श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आये। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कैा श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूँ जाय के कृष्णदास कों काढूँगो। यों कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सों बिदा होय कें मथुरा आये और श्रीगुसाईं जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाँच सो मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास कों पकरि लावो। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कों पकरि लाये। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसाईं जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यौ जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतो जो काका जी कों दर्शन

नाहीं करन देते सो काका जो कों बहुत खेद होत है। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करूँगो तब कृष्णदास आवेगो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा कों आये। तब बीरबल सों कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसाईं जी ने सुनी जो गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सों श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। श्रोर वा श्रोर ते कृष्णदास आये सो श्रीगुसाईं जी कों दर्शन कियो, श्रोर दंडोत करी. श्रोर एक नयो पद करिकें गायो। सो पद॥

राग केदारो

श्री बिट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आये आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र बिहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि॥
अति सेमरदुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिबिधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास बार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसाईं जी के आगे गायो। पाछें श्रीगुसाईं जी कृष्णदास कों अपने घर ले आये। पाछें कृष्णदास सों श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो उठो भोजन करो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूठन लेउगो। तब श्री-गुसाईं जी भोजन को बेठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

ताही कों सिर नाइये जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय ॥
कोजे कहा आन ऊंचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥
सार सार विचार मनों करि श्रुति वचन[1] गोधन लियो निचोय ॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो बिलोय ॥
जाके मन में उग्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय ॥
ताको संग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर करे है जिन कोय ॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोमिदेन तोहि ॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2] ॥४॥

यह पद सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पाछें श्री-गुसांई जी भोजन करिकें पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करो। तब कृष्णदास भीतर गये। तब श्रीगिर-धर जी नें श्रीगुसाईं जी की झूठन को पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनों। पाछें बीडा दोय दिये। रात्रि कों कृष्णदास वहाँई सोय रहे।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसाईं जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियो। श्रीनवनीत प्रिया जी के मंगला के

---

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी किये। तब घोडा दोय मंगाये एक घोडा ऊपर श्रीगुसाईं असवार भये एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीये और श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी को राजभोग आयो हुतो सो श्रीगुसाईं जी ततकाल स्नान करिकें ऊपर पधारे। और श्रीगुसाईं जी विज्ञप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि के श्रीगुसाईं जी को पठावते। सो श्रीगुसाईं जी जल में वोर पिजाते। सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसाईं जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभोग आयो हुतो। सो समय भयो। तब श्रीगुसाईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसाईं जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछो जो नीके हो। तब श्रीगुसाईं जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीके हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झापी में धरयो। पाछें रागभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसाईं जी राज-भोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसाईं जी पोढ़े। सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयो तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो संखनाद करवायो। श्रीनाथ जी के उत्थापन

भये पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियो। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरो

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरहो गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथैं ॥२॥

यह पद गायौ और बीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसाईं जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसाईं जी दिन दोय रहे पाछें श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे ॥

प्रसंग ८

सों बहुत बरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवा-वनों है, और मोकों अपने देश कों जानों है। ताते द्रव्य तुमकों दे जात हों सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही जो आछौ। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयौ। तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड दिये। कह्यौ जो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे। सो आछे मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायौ। तब कितनेक दिन में वह कूआ मोहताई बन के तयार भयौ और दोय से रुपैया लगे। मठोठा बाकी रह्यौ।

तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ में आसा हुतौ। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तब कृष्णदास कूआ में जाय परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूढ़ें परि कृष्णदास कौ शरीर हू न पायौ। तब सब मनुष्य उहाँ ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसांई जी श्रीनाथजी को सेन भोग धरि कें मंजूष विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसाईं जी के पास बेठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यौ जो महाराज कृष्णदास ने कूआ बनवायौ हो। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मोहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूँढवे कौ उतरे, सौ बहुतेरौ ढूँढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानियै कहा भयौ। तब

रामदास जो कहैं जो "अत्रोगच्छंतितामसाः" तब श्रीगुसांई जी कहै जो रामदास ऐसें न कहि ।

अब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो शरीर न मिल्यो ताको कारन कहा । सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतो सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयो । और कृष्णदास ने या सरीर सों श्रीगुसांई जी की अवीज्ञा करी है । जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों हो । सो कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सद्य होय कें पूछरी को ओर एक वृक्ष[1] है पीपर को तहां प्रेत होय कें रह्यो भोग भुगतन कों । ताते कृष्णदास को शरीर कूआ में न मिल्यो । श्रीगुसांई जी की अवीज्ञा ते कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय कें पूछरी की ओर पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ।

प्रसंग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती । सो गोपीनाथ ग्वाल और पाँच ग्वाल पूछरी की ओर ढूंढ़वे कों गये हुते । सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के बैठे हैं । तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी बिनती श्रीगुसांई जी सों करियो और कहियो जो कृष्णदास ने कह्यो है जो हों तुम्हारो अपराधी हो ताते मेरी यह अवस्था है । हूँ श्रीनाथ जी के

---

[1] वृक्ष ।

पास हूँ तो मेरी गति होत नाहीं ताते मेरौ अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय। और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कूआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ कौ बनावायौ। तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास कों प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जो ने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। सो श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा कर्यौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तो श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौ, मो सों बोलत हौ, और में प्रेत हों ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोकों दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लिये। नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतौ और बोलताहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलौ। तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसौ न करै, दूसरे कीर्तन कियै सो अद्भुत कीयै, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै॥ वैष्णव॥ ८१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानन्ददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो परमानंददास जी परम भगवल्लीला मयख्याती[1] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून कों श्रीठाकुर जी कों परकार सब प्रगट भयौ और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रगट भये। सो गोपालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशांतर परवेस"। तातें परमानंददास जी कौ जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयौ। सो वे परमानंददास जी बहुत योग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछौ गावते ताते परमानंददास जी के संग समाज बहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद् इच्छा ते एक समय परमानंददास जी कन्नौज ते आप प्रयाग[2] कों आये सो प्रयाग में उतरे। सो वहाँ कीर्तन बहुत आछें

---

१ मध्य याती। २ माग।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जो परमानंददास जी इहाँ प्रयाग में आये हैं सो कीर्तन बहुत आछें गावत हैं। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया कपूर छत्री, सो उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंददास जी के कीर्तन सुनिवे कूं आवे। सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें।

सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयो। सो वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानंददास जी आज जागरन करेंगें। सो यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन में बिचार्‌यो जो आज परमानंद जी के कीर्तन सुनिवे कों चलनों। सो वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहुँच कें रात्रि कों अपने घर आये। सो घर आय कें अपने मन में बिचार कीयो जो या वेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सो मन में बिचारी जो पैर कें पार जैये। पाछें अपने घर ते चले सो श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये। तब पर्दनी पहर कें बस्त्र सब माँथे सों बाँधि कें श्रीयमुना जी में पैर कें प्रयाग आये। पाछें बस्त्र पहर कें जा ठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहाँ आये, सो इनको कछू मिलाप तौ परमानंद स्वामी सों हुतो नाहीं जहाँ और सब जने वैठे हुते तहाँ एऊ जाय बैठे। परि एउ श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवक है सो सब कोऊ जानत हुते। ताते सबन नें इनकों आदर कर कें वैठा‌ये। सो ये बैठे।

ता पाछें परमानंद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानंद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब ही श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को संग होय तौ श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लिये श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्तःकरणन में प्रेरना करिकें परमानंद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक छन हूँ नाहीं छोड़त इनको संग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यौ है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकस्यौ तातें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। तातें परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो पद।

राग बिहागरो

ब्रज के बिरही लोग बिचारे।

बिन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे॥ १॥

---

[1] भगवदीयन।

मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत[1] पनारे ॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।
परमानंद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे ॥ ३ ॥
और पद गायो सो पद ॥

राग बिहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी।
जो गाहक साधन के ऊधो सो सब बचन ईस पुर कासी ॥ १ ॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी।
अपनी सीतलता नहा छाड़त यद्यपि बिधु राह है ग्रासी ॥ २ ॥
किंह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन ते करत उदासी।
परमानंद असी को बिरहन मांगें मुक्ति गुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को।
नंद नंदन बिन कासों कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति को।
कहा वे मंद सुगंध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ ॥२॥
कहा वे सेज पोढ़िबो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ।
कहा वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गात[4] कौ ॥ ३ ॥

---

१ बहुत। २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है।
३ अमत। ४ गातन।

राग कान्हरो

माई को मिलिवै नंद किसोरे ।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे ॥ १ ॥
जागत जाम गनत नहीं खूटत क्यों पाऊँगी भोरे ।
सुनरी सखी अब कैसें जीऊँ सुन तमचर खग रोरे ॥ २ ॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरे ।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये । पाछिली घड़ी चारि रात्र रही तब जो जो जागरन में आये हुते सो सब अपने घर कों गये । तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हूँ परमानंद स्वामी सों 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले । और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें वहुत प्रसन्न भये । और परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते तातें अधिक देखे । तुम परम भगवद् अनुग्रह पूरण हो । ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है । ए जो चलि आये सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये है नातर भगवदीय काहे कों काहू के घर जाय ।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत है । सो याकौ हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानंद स्वामी के पद सुने। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे। सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों परम अनुग्रह है। ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद में बैठि के परमानंद स्वामी के पद काहे कों सुनने पड़े। सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिबे कों आप पधारे हैं तातें सुने। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंद स्वामी सों जे[1]सी कृष्ण करि के चले। सो श्री-यमुना जी के तीर ऊपर आये। सो वहाँ आय के बिचार कीयो जो नाव की बाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले। सो पैर के पार गये। सो पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा में तत्पर भये।

पाछें वहाँ प्राग में परमानंद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सों आँखि लगी, निद्रा आई। सो इतने में स्वप्न आयो। सो स्वप्न में देखे जो जैसे रात्रि के जागरन में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बैठे हैं और उनकी गोद में श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये। और स्वप्न में श्रीनवनीत प्रिया जी परमा-नंद स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

१ जै (जय श्रीकृष्ण)।

श्रीमुख को कोऊ सोंदर्य कोटि कंदर्पलावण्य परमानंद स्वामी ने देख्यौ। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयौ और मन में चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब यह मन में विचार्यौ जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया बिना न होयगो, ताते होय तो उनके पास जैये। जो उनसों मिले तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानंद स्वामी ने अपने मन में विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कुं चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रातःकाल को समय भयौ। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान संध्या बंदन करत हैं। सो परमानंद स्वामी कों श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयौ साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक में लिख्यो है "सोवस्तुनः कृष्ण एवच" ऐसो दर्शन भयौ। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काहे को बैठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानंद स्वामी के मन में यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछी। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयौ। ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये॥ सो पद॥

राग सारंग

कोन वेर भई चलेरी गोपाले ।

हों ननसार गई हों[1] न्योते वार वार बोलत व्रज बोले[2] ॥१॥

तेरो तन को रूप कहाँ गयो भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यो ।

सब सौभाग्य गयो हरि के संग हृदय सों कमल विरह दह्यो ॥२॥

को बोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि बिकल मन ।

जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानंद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारंग

जिय की साधन जिय ही रही री ।

बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए बिलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥

एक दिन सोंज समीप यह मारग वेचन जात दहीरी ।

प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी वाँह गहीरी ॥२॥

बिन देखें घड़ी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी ।

परमानंद स्वामी बिन दर्शन नेन न नींद बहीरी ॥३॥

राग संगम

वह बात कमल दल नैनन की ।

बार बार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥

वह लीला वह रास सरद की गोरज रजनी आवनि ।

अरु वह ऊची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥

वसन कुञ्ज में रास खिलायो विथा गमाई मन की ।

परमानंद प्रभू सों क्यों जीवे जो पोखी मृदु वेन की ॥३॥

---

१ ही । २ बाले ।

या भाँति परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछू समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानंद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा है। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो।

तब परमानंद स्वामी स्नान कों गये। सो तब परमानंद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आवत हैं। तब निकट आये सो साम्हें मिले। सो उनको देखकें परमानंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सो श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद में बैठि के मेरे कीर्तन सुने, सो आपकी कृपा तें श्रीठाकुर जी ने मोसों कह्यौ, जो मैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री की गोद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा तें मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा तें मोकों दर्शन भयो। इतनी बात सुनि कें उन जलघरिया ने कह्यौ जो ऐसे मति कहो। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ के क्यों गये तातें यह बात मति कहो। तब इतनी सुनिकें परमानंद स्वामी कें आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी कें ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानंद स्वामी तो

स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयो ।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाड़े भये । तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बैठी[1] । तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बैठे । तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायो । पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी कों अनुक्रमणिका सुनाई । काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री-आचार्य महाप्रभून नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायो । तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछू समझत नाहीं । सो परमानंद स्वामी ने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं । जो ये श्रीठाकुर जी सो बिछुरे हो बिछुरे के दुख को तो स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको बिसमरन भयो । जो काहे ते जो सब सब लीला विशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे हैं ।

सो परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्र-मणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई । और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा । जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

१ बैठि ।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"। सो श्रीभगवत कैां श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धर्‍यौ। तातें वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान है श्रौर ये दोऊ परमानंद स्वामी श्रौर सूरदास जी सागर भयै। सो यातें जो श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धरयौ। सो काहे ते जो सब कोऊ सूरसागर श्रौर परमनंदसागर कहते। अब परमानंददास सों श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सों कहैं जो बाललीला वर्णन करि। सो परमानंद जी ने तत्काल बाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान गायै॥ सो पद॥

राग सांमरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
बाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृन[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनों प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वारं वार लाले।
परमानंद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

---

[1] मकराकृत।

यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सो प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानंद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलावल

"मणिमय आंगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाल लीला के पद परमानंददास ने गाये। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानंददास कों अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानंददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी कें नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनोसर होता तब परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानंददास जी नित्य सुनते। सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानंददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ हे।

सुनावते। सो एक दिन परमानंददास जो नें श्रीठाकुर जी के चरणार्बिंद को महात्म सुन्यो। सो चरणार्बिंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायो। सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये॥ सो पद॥

राग कान्हरो

चरण कमल वंदो जगदीश गोधन के संग धाए।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥ १॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानंददास जी नें गायो और श्री-आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायो॥ सो पद॥

राग कान्हरो

"यह मांगों गोपी जन वल्लभ"॥

यह परमानंद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायो। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानंददास जी या पद कों सुनाय कें ब्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है तातें ब्रज कों अवश्य चलनें॥

प्रसंग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो ब्रज कों पधारवे कों उद्यम कीयो। सो दामोदरदास हरिसानी कृष्ण मेघन परमानंददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री

संग लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रज को पधारे।

सो व्रज को आवत परमानंददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानंददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरे घर हू पावन करिये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अंतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि कें पधारें। सो परमानंददास के घर आछी भाँति सों श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो। पाछे भोग सराय कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब परमानंददास सो कह्यो जो कछू भगवद्यश गावो। तब परमानंददास ने मन में बिचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो व्रज में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायो जामें छिन हूँ कलप समान जाय॥ सो पद॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै॥
कमल नैन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै॥१॥
एक वार जाय मिलत माया करि सो कैसे विसरावै।
मुख मुसिक्यान वंक अविलोकन चाल मनोहर भावै॥२॥
कबहुक निवड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावै।
कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहीन उठि धावै॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावै।
परमानंद श्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानंददास नें गायौ ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यौ। सो तीन दिन लों श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही बैठे रहे। चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्रीआचार्य जी महाप्रभू साव-धान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न भये। तब परमानंददास जी मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग बिभाग

माई री हों आनंद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधो जो मांगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनैन व्रज आये सकल संपदा बाढ़ी।
नंदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजे।
मारग मेघ इंद्र वरषा में कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानंददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

---

१ जब।

और हू पद गायौ। सो पद।

राग गौरी। "बिमल जस बृन्दावन के चंद्र को"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारंग। "चलिरी नंदगाँव जाय बसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद में यह कह्यौ जो चलरी नंदगाँव जाय बसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के ब्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे बैठक में तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे। और एक बैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मंदिर के पास हैं सो भीतर की बैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठौर है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हुतो। जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते। सो यह भीतर की बैठक है। पाछें सब वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीये और परमानंददास जी हू श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीये॥ सो पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हों पाऊँ।
तिहारे निकट रहों निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मंजन बिमल पावन जल चिंता कुलख बहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊँ॥ २॥
बिनती करों यही वर मागों अधम संग बिसराऊँ।
परमानंददास फलदाता मगन गोपाल लडाऊँ॥ ३॥

राग रामकी । "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजे[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये । श्रीआचार्य जी आगें तीर विषें गाये ।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास कों बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवायें । सो परमानंददास को ऐसो दर्शन भयो सो सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन कों जल की गागरि उठाय देते है और उनकी कचु[2]तारे हैं या भाँति सो दर्शन भये । सो तैसोंई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी ।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥
नैनन सों नैना मिले मन रह्यो है लुभाई ।
मोहन मूरत जिय वसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट ।
परमानंद ऐसी मिली जैसी गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी वैयां ।
औघट घाट चल्यो नही जाई रपटत हों कालिन्दी महियां ॥ १ ॥

---

१ लीजै । २ कंचुकी ।

यह पद संपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानंद-नें बाल लीला के पद बहुत गाये और श्रीगोकुल कों स्वरूप जामें आवै ऐसो पद गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु ब्रज बानी।
जाके भुवन वसत त्रिभुवनपति राजा नंद यसोधा[1] रानी ॥१॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी ॥२॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्त्र मुखरास।
मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानंददास ॥३॥

यह पद परमानंददास नें गायो। पाछें और पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन ॥
वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमल मुख निरखन ॥१॥
चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन।
लोंन उतारि दोऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन ॥२॥
लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम दिवस[3] लागे द्रुग ढरकन।
चली लै पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन ॥३॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लोग गज मुन।
परमानंददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरंजन ॥४॥

---

१ जसोधा। २ डारत। ३ विवस। ४ अरकसाय।

राग हमीर । " चितै चितै चित वारयौ री माई "

यह पद संपूरण करि कें गायै । सो ऐसे पद परमानंददास ने बहुत गायै ।

ता पाछें श्रीगोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये । सब ऐसे पद गायें जा में श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोकों श्रीगोकुल में आय कें चरणारविंद के नीचे राखो । नितप्रति प्रभून के दर्शन करों[1] । सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं । और यह पद गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

यह मागो जसोदानंदन ॥

चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नेनन पाऊँ दर्शन ॥१॥

चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत बिजलता घन नंदन ।

वृषभानु नंदिनी मेरे उर वसु[2] प्रान जीवन घन ॥२॥

बृज वसिवो जमुना अचिवो श्रीवल्लभ को दास यही पन[3] ।

महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानंददास जीवन धन ॥३॥

राग कान्हरो

" जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन ।

तब लग गोकुल गाँव गुसांई " ॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये । तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गोकुल में विराजे । ता पाछें

---

१ करूँ । २ सर्वस्व । ३ मन ।

सब वैष्णवन कों संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

प्रसंग ३

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सो आवत ही परमानंददास नें श्रीनाथ जी कों श्रीमुख देखि कें वहाँ के वहाँ रहे। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सों कह्यो जो परमानंददास कछू भगवत लीला गावो। तब परमानंददास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारो जो जामें प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणारविंद की बंदना, पाछें भगवद्वर्णन को स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीड़ा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म। ऐसो पद परमानंददास नें गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

मोहन नंदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज बन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानंद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायो ॥

राग पूरवी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन कौ इकठौरौ करि मान्यौ[१] ॥ १ ॥

---

१ मान्यो।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सो ठान्यौ ॥ २ ॥

अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जेसे पान्यौ।
परमानंद मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कों पोढाये। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानंददास हू नीचें आय बैठे। तब रामदास भीतरया नें परमानंददास को महाप्रसाद दूध पठायो। सो दूध परमानंददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददास जी नें सीरो करि कें लीयो। ता पाछें रामदास नें पूछो जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो। तब परमानंददास ने कही जो हाँ आयो परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी कैसें आरोगत हें ताते दूध तो सुहावतो भलो। तब रामदास ने कह्यौ जो बहुत आछो आप भगवदीय हो जेसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कों जगाये। तब वा समय परमानंददास जी जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो। सो पद।

---

१ क्यों। २ सैन।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करों नित्य नेम मेरौ ॥ १ ॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुंजत अंग पंकज वन जागियै भगवान ॥ २ ॥
द्वारे ठाड़े बंदीजन करत हैं पुकार।
वंस प्रसंग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानंद ने गायौ। फिर कलेऊ कौ पद गायौ। सो पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ ॥१॥
अरी मैया गैया एक बन व्याय रही हैं बछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनो अरबराय कोउ सखा न बुलायौ ॥२॥
चकत भई नंद जू की रानी सत्य आय किधों अपनों पायौ।
फूलो न अंग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायौ ॥३॥
मिलि बेठे संकेत सघन वन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानंद सयानो ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानंददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सों पूछी जो आप ताती दूध क्यों आरोगत हो। तब श्रीनाथ जी ने कह्यो जो ये हमको समर्पत है सो आरोगत है। ता पाछें परमानंददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयों सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सों कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुंदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तब राजा नें कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सों बहुत कहत हों परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावो तो वह करै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पौर के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दौर के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सों कही जो मेने तोंसों पहिले ही कह्यो हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है। ये व्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमा-नंददास जी ने पद गायौ।

राग देवगंधार

"कौनि यह खेलवे की बानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥१॥

यह एक तुक परमानंददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानंददास ऐसे कहो जो 'भली यह खेलवे की बानि'। तब परमानंददास जी नें ऐसौ ही पद गायौ। सो पद॥

राग देवगंधार

भली यह खेलवे की बानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥१॥

अपने हाथ ले देत है चनवर दूध दही घृत सानि ॥

जो बरजो तो आँख दिखावै पर धन कों दिन दान ॥२॥

सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि ॥

फोरि डारि दधि डारि आजर[1] में कौन सहै नित हानि ॥३॥

ठाडी देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥

परमानंददास जानत हैं बोलि बूझि धों आनि ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें कितेक पद गाये। जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानंददास नें गायौ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानंद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये। सो

---

१ अजर।

भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बडो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है। सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। तातें भगवदीय की कृपा होय तो श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करों। जब यह बिचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यो। सो पद।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे॥१॥
प्रेम सहत बसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे॥
हृदय कमल के मध्य बिराजत श्रीब्रजराज दुलारे॥२॥
कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारंवार हों वारे॥३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आये भगवदीयन कों विदा किये। ता पाछें ऐसी रीति सों परमानंददास नें श्रीनाथ जी की भली भाँति सो सेवा कीनी। सो वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्रसंग॥ ३॥ वैष्णव॥ ६९॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सो वे कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गांव है तामें रहते। सो जमुनावतौ नाम वा गाँव को काहे ते है जो जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प में याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम वा गाँव को है। तामें कुंभनदास जी रहते और परासोली चंद्रसरोवर के ऊपर उन कुंभनदास जी की धरती हुती सो वहाँ खेती करते। सो कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सो अब ही श्रीगोवर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे।

सो एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे। सो झारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं नागदमन इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सो मेरा नाम है। ताते तुम आयके हमकों पधरावौ और हमारी सेवा को पुकार पगट करौ। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहाँ ही राखि कें बेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोबिंद दुबे, जगन्नाथ जोसी, रामदास ये पाँच वैष्णव संग हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पाँडे के चोतरा ऊपर बिराजे। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पाँडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी। और ब्रजबासी ब्रज में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुंभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आये।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायो। तामें श्रीनाथ जी कों पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब ब्रजबासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास कों जो भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो ब्रजबासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सों यत्न राखियो और सेवा में तत्पर रहियो। और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो। तब या भाँति सों आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती। अब कुंभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तो श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन कों आवते। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

कुंभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म संबंध करवायौ। तब कुंभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते। और श्रीनाथ जी कुंभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदास जी के ऊपर करते। अब रामदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयो। सो यहाँ मानिकचंद पांडे, सद्दू पांडे, रामदास चौहान, कुंभनदास सब मिलि कें बिचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्रेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों, अपनो बिचारयौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो महा-राज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको यहाँ ते ले चलों हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहाँ पधारोगे। तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोड के घने में चलेंगे। तब एक भैसा मंगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बैठाये। तब एक ओर ते तौ रामदास पकरें रहे और एक ओर ते कुंभनदास पकरे रहे और सब सेवक संग चले जात है। तहाँ घने में काँटे बहुत हुते सो उहाँ काँटेन में बैठे सो बस्त्र सबन के फटि गये और सरीर में काँटे लगे दुःख बहुत पायो। सो घने में एक तालाब हुतौ तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी बिराजे। सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

बैठे। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुंभनदास सें कह्यौ जो कुंभनदास जी कछू गावै। तब कुंभनदास जी तो मन में कुढ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो॥ सो पद॥

राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनो॥
कांटे लगे गोखरू बूढे फट्यौ जात यह तनों॥१॥
सिहें कहा लोकटी को डर यह कहा वानक बन्यौ॥
कुंभनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांड ढेडनीको जन्यौ॥

यह पद कुंभनदास ने गायौ। सो सुनि कें श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहे। इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछी फिर गई। तब श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे॥

प्रसंग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। सो ब्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयौ जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयौ। तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनायै। राग श्रीचर्चरी॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें"॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद॥ राग सारंग "कृष्ण तंनतरया तीर" यह पद सम्पूरण करि

कें कुंभनदास ने गायै। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते ।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद में गड़ गयौ और माथो धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहाँ हैं। तब वा कलामत से कहो जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलाओ हम उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुम्भनदास के बुलायवे कों भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[1] तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या मैं कछू देशाधिपति को चाकर तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सों कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास कों ले आवो, ताते यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहो ता पर बैठि कें

१ तब कुम्भनदास सों कह्यौ जो तुमकों पातसाह नें याद कीयो है।

चलिये, हम तो आये हैं सो आपको ले जायंगे । तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयो जो बिन जाये तौ निर्वाह न होयगो सो कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ तें पनहिं पहिर के चले ।

तब कुम्भनदास जी कों लेवे को आये हुते तिनने कहीं जो बाबा सवारी में बेठिये । तब कुम्भनदास ने कह्यो जो भैय्या में तो कबहूँ बेठ्यो नाहीं । पाऊँ ऐसे ही चले । सो फतह [1]पुर सीकरी आय पहुँचे । सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये । तब मनुष्यन नें देशाधिपति सों कह्यौ जो कुम्भनदास जी आये हैं । तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सों कही जो कुम्भनदास जी आवो बेठो । सो आय बेठे । सो वह स्थल कैसो है जामें जडाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बेठे । तब मन में बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यो जो यासो तो हमारे व्रज के होंसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं । तब इतने में देशाधिपति बोल्यो जो कुमनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो । तब कुम्भनदास जो तो मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तो श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरो काम चलेगो नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय । काहे ते जो याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर वचन कहूँ जो बुरेः मानेगों तो कहा करेगो । तब यह मन में आई " जो जाको मन मोहन संग करे एको के सब से नहीं

[1] फ़ते ।

सिरने जो जग बैर परे" । यह विचारि के ता समय कुम्भनदास जी ने एक नयौ पद करि कें गायौ ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर विन यह सब झूठो धाम ॥ २ ॥

यह पद गायौ सो देशाधिपति अपने मन में बहुत कुस्यौ[1] और कह्यौ । जो इनको काहू बात को लालच होय तो मेरो जस गावें इनकों तो अपने परमेश्वर सों साँचो सनेह है । इतनों कहि कें देशाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनो । तब कुंभनदास जी उहाँ ते चले सो मार्ग में आवत अति क्लेश जो कब हों प्रभून कों श्रीमुख देखों । सो ऐसो विचार के कुंभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायौ । सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हों इन नैननु ।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख देननु ॥ १ ॥
वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननुं ।
हँसि हँसि हरखि पतोवन पावन बांटि बाँटि पय फेननु ॥ २ ॥
कुंभनदास किते दिन बीते किये रेणु सुख सेननु ।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चेननु ॥४॥

---

१ कुढ्यौ ।

यह पद मार्ग में गावत आये। सो आपकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन किये। और दोय दिन लो दर्शन न भये सो कुंभनदास जी कों दोय जुग की बराबर बीतो। सो श्रीमुख देखते ही सब दुःख बिसर गयो। तब एक पद गायो। सो पद॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखौ नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हों बिसर्यौ पन परवार॥ १॥
बिन देखे हों विकल भयो हों अंग अंग सब हारि।
ताते सुधि है सावरो मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानों कैसें मिसे लो कन्हाई।
कुंभनदास प्रभू गोवर्धन धर मिलियै बहुर री माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लोग हँसो सब अरु गावो कुल गारी।
सो क्यों रहे ताहि बिन देखे जो जाको हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमखन छाँड़त ज्यों आधीन मृग गानों।
कुंभदास सनेह परम श्रीगोवर्द्धन धर जानों॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी नें गाये। सो सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मो बिन रहत नाहीं"।

---

१ परिमित।

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिके अपने देस कूं चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब बिश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसोराय जी के दर्शन करिकें बृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब बृन्दावन के सब महंतन ने जानी जो आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरण पहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बांधे। इतने में राजा मानसिंह दर्शन को आयो। सौ भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीये। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पै ठाडो न रह्यौ गयो। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खड़े हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठोर ते बिदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन में बिचारे जो अबही कूंच करें।

सो वहाँ सो असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाँव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीये। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन किये। सो वहाँ वृन्दावन के महंतन ने बड़े ठाठ बनाये हैं तेसोई यहाँ ठाठ बनाय राख्यौ हुतो। सो राजा मानसिंग तहाँ ते दर्शन करि के चले। तब काहू ने कही जो महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन कों

चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सो गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे। तह यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये। सो उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आयें, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयैा हुतो। इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गयें।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सों होत हुती। बड़ौ मंदिर सिद्धि भयो हुतो। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयो हुतो। निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन कों गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई। बड़ो चेन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यैा हुतो सो आज देखे। आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरै बड़ौ भाग्य हैं। और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सो तो प्रभून की राजधानी को समय है। सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े

मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सो राजा मानसिंग को मन वा पद में गड गयौ हुतौ। तेसौई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसौई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सो पद ॥

राग नट

रूप देख नेना पल लागे नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तही ॥१॥
कहा कहौ कछू कहत न आवै चित्त चोरयो[1] माँगवे दही ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सों कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयौ है ॥
हों ग्रह अपने सचु सों बेठी निरखि वदन असवरा बिसरयौ है ॥१॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ है ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ है ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा में गयौ। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

[1] चाख्यौ।

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कह्यो जो महाराज एक व्रजवासी है, कुंभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सों मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंग ने कही जो हम हू इनसों मिलैं तो आछौ।

तब राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आये। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें बैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहे जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहूँगो। तब इतने में राजा मानसिंग आयौ सो कुंभनदास जी को प्रणाम करि कें बैठो और श्रीनाथ जी तो उहाँ ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्रीनाथ जी तौ एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हैं। तब कुंभनदास जी की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं। तब कुंभनदास जी ने कही जो मैं कहा करूँ जो बैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहंगे। तब दूर ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास मैं बात कहूँगो। तब कुंभनदास जी प्रसन्न भये और भतीजी सों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करों। तब भतीजी ने कही जो बाबा आरसी तो पडिया पी गई। तब राजा नै कुम्भनदास जी की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पडिया

[1] जो।

कहा पी गई। तब वह कठौटी में पानी लाय कै कुंभनदास जी के आगें धरयौ तब कुम्भनदास जी वा में देखि कें तिलक करन लागें।

इतने में राजा मानसिंग ने अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैया याको हों कहा करूँगो, हमारे तो यहां छानि कै घर हैं तातें कोऊ या के पाछें हमारो जोव लेवगो तातें हमें तो यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंग ने इनके आगें सोने की थैली धरी। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो भैया हमकौ धन तो चाहियें नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिंग ने कह्यौ जो भलो आपको गाम है ताको लिखो है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैया हो तो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं। तब फेरि राजा मानसिंग ने कह्यौ जो बाबा कछु तो आज्ञा करो। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमारो कह्यौ करोगे। तब राजा मानसिंग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहोगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयो। तब राजा मानसिंग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिरो सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तो एक एही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंग कुंभनदास कों दंडौत करि कें उठि चल्यौ। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सों

[1] हों।

श्रीनाथ जी ने वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भये।

प्रसंग ४

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों बृन्दावन के महंत हरिवंश भूत आये। सो यह जानि कें आये सो महापुरुष है, इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीये, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवे आये। सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये सो हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी कैा नाहीं सुन्यैा ताते आप कोइ स्वामिनी जी कैा पद सुनावैा। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी को पद करि कें गायैा॥ सो पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सैाभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[1] चंद्रवारो॥
खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योंछावर उतारो।

[1] कोटिसत।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारों ॥१॥
कोर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौ
पंक कंदूरवह्न कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारौ ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कौटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौ ॥२॥
दासकुंभन स्वामिनी सुनखसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारौ ॥
लाल गिरधर कहत मोहितौ
हिलौजी[1] वह रूप छिन छिन निहारों ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायो सो सुनि के महंत बहुत ही रीझे और कहें जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि वहाँ उपमा दीनी ही और वारि फेरि डारी तातें कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हों आपकी सराहना कहाँ ताँई करियै। वा महंत नें कुम्भनदास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सो बिदा होयकें अपने घर गये।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल में अपने घरते श्री-नवनीत प्रिया जो सों आज्ञा माँगि कें विदेसार्थ[2] द्वारिका कों

---

१ तोहिलोंजी। २ विदेशार्थ।

पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार कियै ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजे। तब सब सेवक दर्शन कों आये। तब बात चलत में कुम्भनदास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यौ जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तो एक खेती की है ताको धन आवत है तासों निरवाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन कों आयै तब श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कहै जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगो। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यो है ताते जो तुम संग चलो तो विदेस में भगवदीय कौ ग्रहकाल बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यौ न परे। और में सुन्यैा है जो कछू तुम्हारे द्रव्य कैा संकोच है सो वहाँ सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुमकैा चल्यैा चाहियै। तब कुंभनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने में दर्शन कैा समय भयो सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुँचिकें श्रीनाथ जी कैा पैाढाय कें बेठक में पधारे और कुम्भनदास जी कैा सीख दीनी जो कुंभनदास जी तुम सेवा सैा पहुँचि कें वेग आईयैा हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दंडोत करिकें अपने घर कों आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछें समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढ़े। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ बैठि के विचारत हुते। कहियै जो कहिवे की होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह बिचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पंछरी की ओर कोनें में जाय कें बैठि कीर्तन गावत है और आखिन में ते जल को प्रवाह बहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारंग

केते है जुग रो बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह कांति बदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

[1] ताही समय को।

श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।

कुंभनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों । सो कुंभनदास जी कों कलेश श्रीगुसाईं जी सों सह्यौ न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारौ विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानियै । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायो । सो गज्जन कों तो भगवद् आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यौ जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यौ । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन की बात न सुन्यो तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो मेरा गज्जन धावन कहाँ है । तब श्रीअक्का जी नें कह्यौ जो वह तो पान लेवे को गयो है । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यौ जो मेरौ गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूंगो । सो श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहे । तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो । तब गज्जन धावन नें कही जो बावा आरोगो तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मां प्रपद्यंतेस्तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोक कह्यौ ।

ताते श्रीमुख सों कहैं जो इहां तुम्हारी बिवस्था और उनकी बिवस्था है। सो ऐसो कुंभनदास कों और श्रीनाथ जी कों बिरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी नें कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुंभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीये। तब कुम्भनदास ने एक पद गायो। सो पद ॥

राग सारंग

जो पै चोंप मिलन की होय ॥

तो क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करो जिन कोय ॥
जो पै बिरह परस्पर ब्यापै जो कछू जीवन बनै ॥
लोक लाज कुलको मर्यादा एको चित्त न गनै ॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय ॥
गिरधर लाल ताहि बिन देखे छिन छिन कलप बिहाय ॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायो। सो सुनि कें श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये। सो कुंभनदास श्रीनाथ जी कों देख कें प्रसन्न भये ॥

प्रसंग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसाइ जी के पास बैठे हुते। तब कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हे तो साथ[2]। तब श्रीगुसाईं जी नें कह्यौ जो कुम्भनदास डेढ कौ कारन कहा। तब फेरि कुम्भनदास जी कहैं जो महाराज आखौ बेटा तौ चत्रभुजदास और आधो बेटा

१ जाहि। २ सात।

कृष्णदास हैं। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधो है । कुंभनदास जी कृष्णदास सों आधो क्यों कहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयो है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है। सो भगवदीय गाये हैं 'जो सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो व्रज भक्तन की कहा रीति है जो श्रीठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करैं और श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करैं। जो ये वस्तु होय तो आखो और इनमें एक होय तौ आधो। तातें चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है तातें आखो और कृष्णदास में एक सेवा है सो आधो। तब श्रीगुसांई जी श्रीमुख ते कहैं जो भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भये तो कौन काम के। यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं ॥ वैष्णव ९० ॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते । श्रीगुसाईं जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[2] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सो सगरी गाय तो खिरक में आई और गाय बड़ी हुती ताकों औन[3] बहुत भारी हुतो सो

१ ग्वार। २ पूछरी की ओर। ३ ऐन।

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय कों आवत अँधियारो परि गयो। सो तहाँ पर्वत के नीचे अँधियारे में एक नाहर निकस्यैा सो गाय पै दोरयौ । तब कृष्णदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखो हो तौ मेरे ऊपर आऊ। तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयो।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिब कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बछरा[2] कों चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुंभनदास जी को भयै। ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदिर में पधारे। तब श्रीगुसांई जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक में से आये सो दंडाती सिला पास ठाडे भये। इतने में समाचार आयै जो कृष्णदास को नाहर ने मारयौ। सो सुनि कें कुम्भनदास कों मूर्छा खाय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गयै। तब कुंभनदास जी कैा सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसांई जी सो कहै जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास उहाँ ही परे हैं। तब गुसांई जी कहें जो गाय कबहू न छोडि आवै। अंत समय गाय संकल्प करत है ताको

---

१ श्रीनाथ जो।　२ बछरा।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तो श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय कैसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जी कहाँ है। तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेश बहुत बाधा कियो है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवत हुते, सो कुम्भनदास जी के आगें काहू नें कृष्णदास के समाचार कहैं, सो सुनत ही कुम्भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भन-दास जी की खबर लाओ जो कुम्भनदास जी की देह कैसें हैं। सो वे आय कें कुंभनदास जी कों पुकारें। तब ये समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहैं जो महाराज कुम्भनदास जी तो कछू सम-झत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तो सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढाय कें आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हें कुम्भनदास जी परे हैं और लोग चारयौं ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी कैसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है, या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनि कें श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जो यहाँ तो कारण कछू और है और लोगन कों तो कछू और भाखत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जी सवारे तुम वेगी

आईयो तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मन में खेद मति करो। इतनो श्रीगुसांई जी श्रीमुख सों कहैं तब कुंभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांई जी कों दंडोत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनों हो सो सब कीयो।

पाछें सवारे कुंभनदास जी दर्शन कों आये। श्रीनाथ जी कों सिंगार करिके श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो प्रथम कुम्भनदास जी कों दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियो जो सूतकी को कोंन मंदिर में जान देतो। सो कुम्भनदास जी के अनुग्रहतें सब कोउ दर्शन करत हैं। सो कुंभन-दास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठते। सो वहाँ बैठे बैठे विरह के पद गावते। सो पद ॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल।
अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे बिरही बेहाल ॥ १ ॥
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन वढ़ी[2] ज्वाल ॥ २ ॥
कुम्भनदास प्रभू नवधन तुम बिन कनकलता मानों सूषी
जीव मा[3] काल।
अधरामृत वंशी सीचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल ॥ ३ ॥

१करावेंगे। २ वढ़ी। ३ मां।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये ।
तब ते निघतट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गये ।
यह जानिये विधाता जुग सम कीने जाम नये ।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठये[1] ।
व्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लये ।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पये ।
कुम्भनदास बिछुरत नंदनंदन बहुत संताप करे ।
अब गिरधर विन रहत निरंतर नैात न नीर क्ष्ये ॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयो मेरी छिसा ।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा ॥
ना जानों यह बिधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसो कोन रिसा ।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा ॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद किये । पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदास जी भगवत्सेवा में आये । ऐसी जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं । ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताई लिखिये ॥ प्र० १ ॥

---

१ ठये ।

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

नंददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सो विनकूं नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोक बहुत हतो। सो वा देश में सूं एक संग द्वारका जात हतो। सो नंददास जी ऐसे विचारे कें में श्रीरणछोड जी के दर्शन कूं जाऊँ तो अच्छो है। जब विन नें तुलसीदास जी सूं पूँछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचंद्र जी के अनन्य भक्त हते जासूं विन नें द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नंददास जी नहीं माने सो वा संग में चले गये। सो मथुरा सूधे गये। मथुरा में वा संग कूं बहुत दिन लगे सो नंददास जी संग कूं छोड़कर चल दीने।

सो नंददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सो कुरुक्षेत्र की आड़ी सीनंद गाम में जाय पहुँचे। सो वहाँ एक साहुकार क्षत्री रहतो हतो। तब नंददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतो सो नंददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आखो दिन जाय के वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब वा छत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐसे करते बहुत दिन वीते।

जब वा छत्रानी की जात में बहुत चर्चा फैली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम में रहनो नहीं। तब उहाँ ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कूं चले कारण कें सब वैष्णव हते। तब नंददास जी कूं खबर भई तब नंददास जी हूं विन के पाछें गये। रस्ता में विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे ब्रज में पहुँचे। सो यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मलाहन कुं दीनो और ये कही कें या ब्राह्मण कूं मती उतारो ये हमकूं दुःख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कूं यमुना जी के पार क्यों बैठाय आये हो। तब वा क्षत्री के मन में ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सो क्षत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यो।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कूं पार सों बुलाय लीनो। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा क्षत्रानी के नेत्रन में नंददास जी कूं होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहाँ ते छूटके साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद में लग्यो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढे रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नंददास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धराई। तब नंददास जी महाप्रसाद लेवे बैठे। तब महाप्रसाद लेत ही नंददास जी कुं देहानुसंधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला में मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवे लग्यो। भरे घर के चोर की सी नाई मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नंददास जी के कान में कही कें नंददास जी उठो दर्शन करो। जब नंददास जी उठके ठाढ़े भये। तब नंददास जी नें उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपल ललन कों मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला संबंधी बहुत नये करिके गाये।

सो नंददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सों विनको मन खीचकें श्रीप्रभुन में लगाय दीनो। सो वे क्षत्री की बहू जिनसों नंददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्री की वहू नंददास जो कुं रास्ता में पाँच सात वार नित्य दीखती हती परन्तु नंददास जी वाकी आडी देखते ही न

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासूं इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नंददास जी कुं आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये और नंददास जी कूं किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नंददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
बनते आवत गावत गैारी ॥ २ ॥
देख सेखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भांत सूं नंददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

सो नंददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते । जिनकूं संसार ऐसो फीको लागतो जैसे मनुष्य कूं उल्टी देखके बुरो लगे । जासूं वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीब्रजभूमी इनको स्वरूप विचारयो करते । प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो । जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुंवरकार सखी भेष कीजे' । या पद में कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई । प्यारी के पायन आज आन परे सोई' । ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती ।

प्रसंग ३

सो वे नंददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते । सो नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते । सो विननें सुन्यो नंददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं । तब तुलसीदास जी के मन में ये आई कें नंददास जी नें पतिव्रता धर्म छोड़ दियो है आपने तो श्रीरामचंद्र जी पती हुते । सो तुलसीदास जी नें ये विचार कें नंददास जी कुं पत्र लिख्यो जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी । ये पत्र जब नंददास कुं पहुँचो तब नंददास जी ने बाँच के यह उत्तर लिख्यों । जो श्रीरामचन्द्र जी तो एक पत्नीव्रत हैं सो दूसरी पत्नीनकुं कैसे संभार सकेंगे । एक पत्नी हुँ बरोबर संभार न

सके। सो रावण हर ले गयो। और श्रीकृष्ण तो अनंत अबलान के स्वामी हैं और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कुं सुख देत हैं। जासूं मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सो जानोगे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बात्र के विचार किया कं नंददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सो उनकी टेक हमसूं अधिको है। हम तो अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नंददास जी तो व्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनको टेक हमारी टेक सूं बड़ो है। सो वे नंददास जी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

सो एक दिन नंददास जी के मन में ऐसी आई जो जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सो हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सो ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्रीमद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सुं आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश में मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन कर कें व्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी, श्रीमद्भागवत

भाषा न कर्यो। ऐसो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ५

सो नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हते। सो काशी जी ते नंददास जी कूं मिलवे के लियें ब्रज में आये। सो मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नंददास जी की खबर काढ के श्रीगिरिराज जी गये। उहाँ तुलसीदास जी नंददास जी कुं मिले। जब तुलसीदास जी नें नंददास जी सुं कही कें तुम हमारे संग चलो, गाम रुचे तो अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो काशी में रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, वन रुचे तो दंडकारण्य में रहो, ऐसे बड़े बड़े धाम श्रीरामचंद्र जी ने पवित्र करे है। तब नंददास जी ने उत्तर देव कुं ये पद गायो। सो पद॥

जो गिरि रुचे तो वसो श्रीगोवर्द्धन,
गाम रुचे तो वसो नंदगाम।
नगर रुचे तो वसो श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम॥१॥
सरिता रुचे तो वसो श्रीयमुनातट
सकल मनोरथ पूरण काम।
नंददास कानन रुचे तो
वसो भूमि वृन्दावन धाम॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जो बोले जो ऐंसो कोन सो पाप है जो श्रीरामचंद्र जी के नाम सूं न जाय। जासूं तुम श्रीरामचंद्र

कूं भजो। तब नंददास जो नें एक कोर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें में श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहुँ न परे चैन
मुखहुँ न आवै बैन तनकी दशा कछु और रहो री ॥१॥
जेतेक नेमधर्म व्रत कीने री मैं
बहुविध अंगो अंग भई मैं तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधों कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कूं गये तब तुलसीदासहुँ उनके पीछें पीछें गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथैा नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी बिना और दूसरे कूं नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में विचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकुं श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धननाथ जी सों बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमें, धनुष बाण लेओ हाथ ॥

ये बात सुनकें श्रीनाथ जी कों श्रीगुसाईं जी की कान तें विचार भयौ जो श्रीगुसाईं जी के सेवक कहें सो हमकुं मान्यो चाहिये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें श्रीरामचंद्र जी को रूप धर के तुलसीदास जी कुं दर्शन दिये, तब तुलसीदास जी नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं साष्टांग दंडवत करी।

जब तुलसीदास जी दर्शन करके बाहिर आये। तब नंददास जी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदास जी हूँ संग संग आये। तब आयकें नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साष्टांग दंड-वत करी और तुलसीदास जी नें करी नहीं। और नंददास जी कुं तुलसीदास जी नें कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहाँ कराये वैसे ही यहाँ कराओ। जब नंददास जी नें श्रीगुसाईं जी सों बीनती करी ये मेरे भाई तुलसीदास है, श्रीरामचंद्र जी बिना और कुं नहीं नमें है। तब श्रीगुसाईं जी नें कहीं कें तुलसीदास जी बैठो। जब श्रीगुसाईं जी के पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथ जी वहाँ ठाढे हुते और विन दिनन में श्रीरघुनाथ जी को विवाह भयो हतो। जब श्रीगुसाईं जी नें कही रघुनाथ जी तुम्हारे सेवक आये हैं, इनकुं दर्शन देवो। तब श्रीरघुनाथ लाल जी नें तथा श्रीजानकी वहू जी नें श्रीरामचंद्र जी को तथा श्रीजानकी जी को स्वरूप धरकें दर्शन दिये। साक्षात् दर्शन भये। तब तुलसीदास जी नें साष्टांग दंडवत करी। याही तें श्रीद्वारकेश जी नें मूलपुरुष में गायो हे, "हेतु निज अभिधान प्रकटे तात आज्ञा मानकें।" और तुलसीदास जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "वरणों अवधि

गोकुल गाम" ये पद गाय कें तुलसीदास जी बिदा होय के अपने देशकुं गये ।

सो वे नंददास जी श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं तथा श्रीरघुनाथ जी कुं श्रीरामचंद्र जी को स्वरूप धरके दर्शन देणे पडे । जासूं इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये । वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के बेटा तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सो एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगोवर्द्धनाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयो जासूं वा बेटा कौ नाम चतुर्भुजदास धर्यो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। श्रौर चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन नें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय श्रौर इच्छा आवे तो बोलवे चालवे सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में बैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें श्रौर पूछें श्रौर पद गावें श्रौर जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजबासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजबासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कहो जो महाराज मोकुं तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य आछी नहीं हती जब तू क्यों न भाग आयो। सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकंठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कूं पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। "सुन्दर बदन निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनिकें कुम्भनदास जी ने निश्चय करयो जो इनकुं श्रीगुसाईं जी की कृपा सों संपूर्ण अनुभव भयो। सो बड़ी दया मान के बहोत प्रसन्न भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सो कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं। ऐसो जानते जो श्रीनाथ जी संग खेलत होएंगे। सो चतुर्भुजदास ऐंसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के श्रृङ्गार के दर्शन चतुर्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते हते। ता समें चतुर्भुजदास जी नें ये पद गायो।

"सुभग श्रृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें।
आपुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब एक वैष्णव नें पूछ्या जो महाराज चतुर्भुजदास जी नें "आज की छबि कछु वरनि न जावे" ऐसे गायो और आपतो नित्य श्रृङ्गार करे हैं और आरसी दिखावें है। सो आज को अभिप्राय कछु समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सो चतुर्भुजदास सों पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सों पूंछी। जब चतुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सो पद। "माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यों कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण में नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कूं और लीला के दर्शन करवे वारेन कूं क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गायो है। चोथे आख्यान में पांचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसी भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनको नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयो।

प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल बिराजते और श्रीगिरिधर जी सों लेके सब बालक श्रीजी द्वार बिराजते हते। तब उहाँ रास-धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सों पूंछ के परासोली में रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सुं श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सूं में कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कु ं जगाय के श्रीनाथ जी परासोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भुजदास कूं और श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये। और कोई कुं दर्शन भये नहीं। तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे। जब अधिक सुख भयो रातहुँ बढ गई और चतुर्भुज-दास जी नें गायो सोपद। "अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रंग राचें।" पद दूसरो। "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान," ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये। जब रास भयो तब परम आनंद भयो।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कु रात के जगे जान के सवारे जगाए नहीं। इतने में श्रीगुसाईं जी गोकुल तें पधारे और पूँछी जो कहा समय है। जब श्रीगिरिधर जी नें कही जो श्रीनाथ जी जागे नहीं है। रात कुं रास में जगे हते। जब श्री-गुसाईं जी नें कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं और सदैव जगें है जासूं शंखनाद करावो। जब शंखनाद कराय के श्रीनाथ जी कु ं जगाए। फेर श्रीगोकुलनाथ जी कुं श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो ऐसो आग्रह करिके श्रीनाथ जी कुं पधरावने नहीं। एतो सदैव अपनी इच्छा तें रास करत है जासूं बीनती करिके पधरावने नहीं। वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सो आज्ञा करी जो अपच्छराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कूं बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कुं बुलाय के आप फूल वीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सूं बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कस्यौ जे यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। "गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भईं। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानवे वारे भये।

प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की वहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जी कुं सूतक आयो। सूतक में चतुर्भुजदास जी बन में बैठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विनके चारो और दूर दूर खेले करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करो। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात में कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जी ने धरेजा कस्यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कुं मथुरा में अपने घर पधरावें तो ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागनवदी षष्ठी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कुं मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण करयौ। और बेटी जी ने एक वीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासूं समझते नहीं हते। सो विटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीनी। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने वीटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके विरद के पद और हिलग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य विनकुं संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय हो।" या पद की छेली तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार करयो जो सर्वथा काल इहाँ

पधारूँगो जासूं भक्त को दुःसह दुःख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कुं आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगंगो जब श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कुं पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय कें मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कुं पधारते अवार होय गई। जासूं राजभोग तथा शयनभोग एक समय में आरोगे। वा दिनकूं आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हें। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सों रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूंछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब विननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सों पूछो जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला में कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कुं किशोर लीला में बहोत आसक्ती है जासूं ऐसे बोले भगवल्लीला में भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हैं। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसूं श्री-गुसाईं जी कछु गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सो विनकूं भगवल्लीला को अनुभव भयो जब राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला में प्रवेश भयो। राघोदास जी की बेटी ने डेढ तुक धर के धमार पूर करी। वे चतुर्भुज-दास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चौरासी वार्ता में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा में रहते हते। और मथुरा जी में पाँच चौबे बड़ा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे विन पाँचन में मुख्य हता। सो विनने विचार करयो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासूं ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने हें। परन्तु हमारे ऊपर चले तब साँची मानें। ये विचार पाँचो चौबेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लेके पाँचो चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तो बाहिर बैठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हता विनकुं भीतर पठायो। सो वे छीत चौबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सूं आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद् गरी निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जो महाराज मोकुं शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कुं नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कुं गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी बिराजे और बाहेर आयके देखे तो बिराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सों जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोबे बाहर बैठे हते विनने छीत स्वामी कुं बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जो तुमारे संगी बाहेर तुमकुं बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आयके चारो चौबान से कही मोकुं टोना लग गयो हे तुम भाग जावो। नहिं तो तुमको लग जायगो। ये सुनके चारो चौबे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरिधर सों पहेचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥१॥
छोटो बड़ो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायौ श्रीविट्ठल कृपानिधान ॥२॥

ये पद सुनके श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कुं साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप में अभेद निश्चय भयो, दोनों स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लगे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कुं गये। उहाँ श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर निकसवे

पूँछी जो श्रीगुसाईं जी कब पधारचे है। तब उहाँ के लोगन नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो गोकुल बिराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगोकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियो जो श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसाईं जी एक ही स्वरूप है। जब सूं छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐसी छाप के बहुत पद गाए। सो वें छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सो वे छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित हते। सो वे बीरबल के पास वर्षोंधी लेवे कूं गए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव किये पूरण तप, सोई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बोले जो मैं तो वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जबाब देओगे वे तो म्लेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मै नीके जबाब देउँगो और मेरे मनसूं तो तूही म्लेच्छ है। आज पीछे तेरो मुख न देखूंगो ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सूं पूँछो जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लोग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जो तुम और हम नाव में बेठे हते जब

दीक्षित जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य देती हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में पटक दीनी। जब मेरे मन में बड़ा गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी माँगी। तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी में सुं खोब भरिके मणी काढ़ी तब हमकुं कही तुमारी होय सो पहिचान लेओ। जब हमकूं ये निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है, ईश्वर विना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये बात विचार करनें तुमारे पुरोहित की सब बात साची है सो तुमनें क्यों विचार न कर्यो। ये बात सुनके बीरबल बहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यों नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहोर के वैष्णव आये हते विनसों आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखते रहियौ। जब छीत स्वामी बोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकुं लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रांत घाट है सो आपकी कृपा सों सब चलेगो। यो बात सुनके श्रीगुसाईं जी बहोत प्रसन्न भये।

प्रसंग ३

और एक दिन बीरबल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्माष्टमी के दर्शकुं आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूँ छाने छाने आयो। तब जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्यन की भीड़ में। तब देशाधिपती कुं श्रीगुसाईं जी विना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कुं पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलैं कबहुक उतर झुलावै हो ॥ १ ॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले विंगीटु झुणझुणा हात बजावें हो ॥ २ ॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो ॥ ३ ॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाए हो ॥ ४ ॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कुं भए। और देशाधिपतीकुं हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए। तब देशाधि-पतीकुं महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तब देशाधिपती नें बीरबल सूं पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरबल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कहो ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मैं तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नहीं भये। तब

देशाधिपती नें कही तुमकुं गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकुं इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकुं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें। सो वे छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव॥ २॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आंतरी गाम में रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीतो सो रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसे होय याही बात की तलासी करत रहते हुते।

एक समय गोविंददास आंतरी गांम ते व्रज कों आये। और महावन में आयके रहे। काहे तें जो यह व्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हुते। सो आप पद करते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होत हैं। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसो विचार कियो जो श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तो ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महाबन गयो हुतो। सो भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। वा वैष्णव की गोविंद स्वामी की आपस में

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकुं बहुत दिन सों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिकें कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कुं श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाईं जी नें बसकर राखें हें। तातें श्रीठाकुर जी और ठौर कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हें। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कुं अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकुं श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर संध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कुं श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन में समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कुं देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सूं देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामें कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनति करी हे महाप्रभु मोकूं कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के संनिधि में नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कूं साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो आपनो कपट रूप दिखावत हो। साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कूं मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की बार है। तासूं कर्म मार्ग की बार बिना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाको रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहां श्रीठाकुर जी सुनवेकं पधारते हते। जब उहाँ मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिबेकुं आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकुं गोविंदस्वामी नें कही। इहाँ ताँई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकुं गान को अभ्यास है। यातें आपकुं कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले जो इहाँ कोई आदमी तो दिसे नहीं है। तुम कौनसूं बात करत हो। तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी नें पूँछी जो श्रीठाकुर जी कैसे गावें हें। तब गोविंदस्वामी नें कही श्रीठाकुर जी बहोत आछे गावें हें। परंतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी जी बहोत आछो देत हें। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप होय रहे।

प्रसंग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो उहाँ आंतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सो श्रीगोकुल आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जो गोविंदस्वामी कहा हें। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये। तब तिनमें सूं एक पहेचानतो हतो। जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामी-पनो छोड़ दियो। जासुं तुम ऐसे समझो जो मर गये हें। जब विननें बीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद स्वामी नें विनकुं ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सो गोविंदस्वामी के संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई। जिनके संग ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै। विनिकी बात कहा कहिये।

प्रसंग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जी

में पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कुं साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते । जैसे स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है । वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुना जी में पाँव नहीं धरते हुते । और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते ।

सो एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकु पकड़ के श्रीयमुना जी में नहायवे लगे । जब गोविंद-स्वामी नें बीनती करी जो ये मल मूत्र को भर्यो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है । श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं । जासूं ये अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है । श्रीयमुना जी कुं तो उत्तम सामग्री चहिये । ये सुनके श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे । सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हते ।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवनं नयतो सदार
वेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सुसख्यः ।
अस्पंदनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
निर्योगपाश कृत लक्षणयोर्विचित्रं ॥

या श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहबे लगे । जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पोढे । गोविंदस्वामी घरकूं चले । तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णावन के मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसंग चलतो। हतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐसे कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनौ भाइन सों कही जो गोविंद स्वामी नें श्रीगुसाईं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। श्रौर इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जी चुप होय रहे॥

प्रसंग ६

सो गोविंद स्वामा श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड मों गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के संग गोविंददास आवते हते। उहाँ से राजभोग की आरती भई ऐंसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हें। गोबिंद स्वामी नें जायके श्रीगुसाईं जी सों बीनती करी। जब श्रीगुसाईं नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

श्रौर गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जो एक दिन पूंछरी की श्रौरतें गोविंददास श्रीनाथ जी के

संग आवते मैंने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा हैं। सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा-पात्र हते।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रीनाथ जी के दर्शन कुं गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कही कें पाग के पेच क्यौं खोल डारे हैं। जब श्रीनाथ जी नें कही तूं पाग के पेंच संवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सों कही जो गोविंददास नें अप-रस क्विाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी के शृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कुं आठ कांकरी मारी। जब गोविंदस्वामी नें

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसाईं जी नें कही गोविंददास यह कहा किया। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ वखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गौविंददास जी कुं ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सुं बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सुं एक दिन तो बोलो। तब विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछू दिन रहिके बेटी देसकुं जावे लगी। जब बहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन में दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लिये बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकुं तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये। बेटी अपनें घर कों गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अंश सो ऐसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकें श्रीगुसाईं जी बीडी अरु गावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे बिना गोविंद स्वामी चुप कर रहे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करो। तब गोविंद स्वामी नें कही महा-राज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बंद भयो अब कहा गावूं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे बैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की वा धमार में धरी। वा दिन सूं गोविंद स्वामी की धमार लोक में साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो लीला के दर्शन करिकें गान करते हते॥

प्रसंग ११

सो वे गोविंद स्वामी महाबन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कुं पधारते हते। श्रौर श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। श्रौर वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला में अष्ट सखान में हते। सो कोई समें श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढते। श्रौर गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते श्रौर एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसाईं जी भोजन करवें कुं पधारें तब मोकुं बुलाय लीजो।

एक दिन वा मनुष्य के मन में ऐसी आई। जो श्रीगोकुल नाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सों छाने पधारते है। एक दिन जो मैं

न बोलाओं तो गुसाईं जी सब जान जाएंगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तो नित्य जाते बंद होय जाएंगे। ये समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयो। जब श्रीगुसाईं जी भोजन को पधारवे लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसाईं जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जो गोविंद स्वामी के पास बल्लभ जी बैठे हैं तिनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसाईं जी तो सब जानत हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सों कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी तुरत लख आयके बिराजते हते।

प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कुं खबर न हती। जब एक दिन एक ब्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक संभार के घर राखियो काल तेरे घर कुं आयके ले जाऊँगो। वे ब्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कुं पाग बाधवे की ऐसी चतुराई हती।

प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहाँ एक दिन एक बैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हुतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तुं मत गावै या गायिवे सों कहा होत है। तब वा वैरागी नें कही मैं तो मेरे राम को रिझावत हो। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तो चतुर शिरोमणी है सो कैसे रीझेंगे। जो तेरा साचो भाव होय तो मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐसे निःशंक हुते।

प्रसंग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके बिराजते हुते और मुरली बजावत हुते, और गोविंददास दूर सों टेकरा के ऊपर बैठे देखते हुते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय के उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पें सुं देखे और उतावल सों कूदे और वागा को दावन फट गयो और लीर झाड पें रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दांवन फट्यो है। जब मनुष्यन सों पूछी जो इहाँ कोई आयो तो नहीं हुतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हें। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चंचल है स्याम ढाक पें सूं कूदि के वागा को दांमन फाड्यो है। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों पूछी जो आपने उतावल काहें कों करी। तब श्रीनाथ जी

जी नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो। और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। वा दिन तें ऐसौ बंदोबस्त कस्यौ जो तीन बेर घंटानाद तथा तीन बेर शंखनाद करि के और बीस पल रहिके मंदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे में अकबर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हें और निरपेक्ष हें और निःशंक हें। जब इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय। ये विचार करिके पातशाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जब गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी। जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयो। जब वानें कही जो मैं पातशाह हूँ। जब विनने कही जो तुम पातशाह हो तो पातशाही करो। परन्तु ये राग तो तुमारे सुनबे सूं छिवाय गयो। जब पातशाह नें विचार कस्यो एक देस को मैं राजा हूं और इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है। जासूं ये काहे कूं आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिकै पातशाह चले गये। और गोविंद स्वामी नें वा दिन सूं भैरव राग गायो नहीं। वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

प्रसंग १६

और वे गोविंद स्वामी के संग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकुं घोडा कर्‌यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याईं लघुशंका करी। ये बातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सों जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते है सो हाथी घोडा को स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवे। और इन बातन में तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी में केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को बागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सों पूँछो जो नीके तो हो। सो सुनकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मांदो मनुष्य की पोसाक पहेर्‌यो है जब कैसे न पूँछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहै।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सों गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकूं प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कूं पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप संग में मोकुं खेलवे कूं ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकूं रहि जाऊँ तो वन में पाछे मोकुं श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसो बंदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन बिना श्रीनाथ जी रहि नहीं सके॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी संग खेलते हते। तब श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तब श्रीनाथ जी भाग के मंदिर में घुस गये। तब मंदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कुं गोली मारि। तब सेवक टहलवान नें गोविंददास कुं धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता में बठे और कहे जो अबि गायन के संग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउंगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मंदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तब श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सों पूछे जो कैसे हो। तब

श्रीनाथ जी नें कहि जो जहाँ सुधि गोविंददास कुं नहिं मनावोगे तहाँ सुधि मोकु कछू आवेगो नहीं, काहे ते मोकुं रस्ता चले विना और वाके संग खेले विना सरेगो नहिं। अबि रस्ता में जाउं तो आनगिनतोन कि मार देवेगो। या चिंता के लिये मोकुं कछू भावे नहिं है। गोविंददास आवेगो जब कछु भावेगो।

ये बात सुनके और श्रीनाथ जी की भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयो। तब गोविंददास कुं बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सुं बीनति करि जो ये हाजिर है अब आय गये है। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग १९ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.

	Rs.	a.	p.
Yugal Kosh—Containing Sanskrit Words with their Meanings in Sanskrit and Hindi and sentences to illustrate them from standard authors. Double Crown 8vo., 493 pages	4	0	0
Sanskrit Shabdarth Kaustubh.—A standard Dictionary of Sanskrit Words with their Meanings in Hindi, with four very useful appendices, Crown 8vo., pages 984+130. Cloth bound ...	6	0	0
Persian Gem Dictionary.—(Pocket Edition) Containing Persian Words with their Meanings in Urdu, for the use of students and general readers. Size 5″× 3¼″. Handsomely bound in cloth. 480 pages. *2nd Edition*	0	10	0
The Student's Desk Dictionary.—(Pocket Edition) Containing English Words with English and Hindustani Meanings in Roman character. Size 5″× 3¼″. Printed neatly and handsomely bound. *The cheapest and smallest dictionary ever published in India*	0	10	0
The Student's Home Dictionary.—Containing English Words with their English and Urdu Meanings. Pocket Edition, size 3½″× 5″. 747 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth...	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing Urdu Words with their Meanings in English. Pocket Edition, size 3½″× 5″. 825 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth ...	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing English Words with their English and Hindi Meanings. Pocket Edition, 3½″× 5″. 808 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth,	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing Hindi Words with their Meanings in English. Pocket Edition, 3½″× 5″, 837 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth ...	1	0	0

PUBLISHER AND BOOKSELLER, ALLAHABAD

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.